वेद

Scanned with CamScanner

वेद	शाखा	ब्राह्मण	आरण्यक	उपनिषद्	शिक्षा
ऋग्वेद	शाकल, बाष्कल, आश्वलायन, शांखायन, माण्डूकायन	ऐतरेय ब्राह्मण कौषीतकि ब्राह्मण (शांखायन)	ऐतरेय आरण्यक शांखायन आरण्यक	ऐतरेयोपनिषद् कौषीतकि " बाष्कलोपनिषद्	पाणिनीय शिक्षा शौनकीय शिक्षा षोडशश्लोकी शिक्षा
शुक्लयजुर्वेद	माध्यन्दिन शाखा, (वाजसनेयी) काण्व शाखा	शतपथ ब्राह्मण	बृहदारण्यकम्	ईशोपनिषद्, बृहदारण्यकोपनिषद्	याज्ञवल्क्य शिक्षा
कृष्णयजुर्वेद	तैत्तरीय मैत्रायणी कठ कपिष्ठल	तैत्तरीय ब्राह्मण मैत्रायणी ब्राह्मण * 8 ब्राह्मण ग्रन्थ *	तैत्तरीय आरण्यक मैत्रायणी आरण्यक	तैत्तिरीयोपनिषद् मैत्रायणी उपनिषद् कठोपनिषद् महानारायणी " श्वेताश्वतरोपनिषद्	व्यास शिक्षा वाशिष्ठ शिक्षा भारद्वाज शिक्षा माण्डव्य शिक्षा
सामवेद	जैमिनीय कौथुमीय राणायनीय	प्रौढ/ताण्ड्य/पंचविंश/महाब्राह्मण, षड्विंश/अद्भुत, आर्षेय, दैवत, सामविधान, वंश, जैमिनीय/तलवकार, संहितोपनिषद्	जैमिनीय/तलवकार, छान्दोग्य आरण्यक	केनोपनिषद्, छान्दोग्योपनिषद्	गौतमी शिक्षा लोमशी शिक्षा नारदीय शिक्षा
अथर्ववेद	पैप्पलाद, शौनकीय, तौद, मौद, जाजल, जलद, ब्रह्मवद, देवदर्श, चारणवैद्य	गोपथ ब्राह्मण	-	प्रश्नोपनिषद्, मुण्डकोपनिषद्, माण्डूक्योपनिषद्	माण्डूकी शिक्षा वर्णपटल शिक्षा

वैदिक व्याकरण के रचनाकार ⇒ भारद्वाज:

Scanned with CamScanner

* आचार्य सायण ने सर्वप्रथम कृष्णयजुर्वेद संहिता का भाष्य किया

वेद	भाष्यकार	श्रौतसूत्र	गृह्यसूत्र	धर्मसूत्र	शुल्बसूत्र
ऋग्वेद	स्कन्दस्वामी (ऋगर्थदीपिका), नारायण, उद्गीथ, माधव भट्ट, वेंकटमाधव, सायण धानुष्क यज्वा (त्रिवेदी भाष्यकार)	आश्वलायन, शांखायन	आश्वलायन, शांखायन कौषीतकि	वशिष्ठ, विष्णु	–
शुक्लयजुर्वेद	उवट, महीधर (वेददीप), हलायुध (ब्राह्मण सर्वस्व), सायण (वेदार्थ प्रकाश), मुरारि मिश्र, आनन्दबोध, अनन्ताचार्य	कात्यायन	पारस्कर	हारित, शंख	कात्यायन
कृष्णयजुर्वेद	कुण्डिन, भवस्वामी (आदिभाष्य) भट्टभास्कर (ज्ञानयज्ञ भाष्य) क्षुर, सायण (वेदार्थ प्रकाश)	बौधायन, आपस्तम्ब, मानव, सत्याषाढ, वाराह काठक, वैखानस, भारद्वाज, वाधुल	बौधायन, आपस्तम्ब, मानव, हिरण्यकेशी, वाराह, काठक, वैखानस, भारद्वाज अग्निवेश्य, चारायणीय	बौधायन आपस्तम्ब वैखानस	बौधायन, मानव, आपस्तम्ब, वाराह, हिरण्यकेशी मैत्रायणी
सामवेद	माधव (विवरण भाष्य), गुणविष्णु (छान्दोग्यमन्त्र भाष्य) भरतस्वामी	आर्षेय / मशक, द्राह्यायन, जैमिनिय, लाट्यायन	गोभिल, द्राह्यायन, जैमिनीय, खादिर, कौथुम	गौतम धर्मसूत्र	–
अथर्ववेद	सायण (वेदार्थ प्रकाश) सातवलेकर - सुबोध भाष्य ↓ (आधुनिक सायण)	वैतान	कौशिक	–	–

* 'ऋग्वैदिक - इण्डिया' → अविनाश चन्द्र दास
* On the Vedas → अरविन्द घोष

Scanned with CamScanner

वेदों का काल

⇒ **मैक्समूलर**

↳ इन्होंने गौतम बुद्ध के आविर्भाव को आधार बनाया।

- छन्दकाल = 1200 ई.पू. – 1000 ई.पू.
- मन्त्रकाल = 1000 ई.पू. – 800 ई.पू.
- ब्राह्मणकाल = 800 ई.पू – 600 ई.पू.
- सूत्रकाल = 600 ई.पू. – 400 ई. पूर्व

} आधार- बौद्धसाहित्य

- Vedic Hymns, History of the Ancient Sanskrit literature

⇒ **ए. वेबर**

↳ • 1200 ई.पू. – 1500 ई.पू.

- इन्होंने बाद में कहा कि - 'वेदों का समय निश्चित नहीं किया जा सकता।

"Any such of attempt of defining the vedic antiquity is absolutely fruitless." – History of indian literature.

⇒ **जैकोबी**

↳ 4500 से 2500 ई. पू.

आधार = ज्योतिष ध्रुव तारा (ध्रुवं पश्य विधि)

↳ ऋग्वेदस्य मण्डूकसूक्तस्य ऋचामधिकृत्य ज्योतिष गणना

Scanned with CamScanner

⇒ **बालगंगाधर तिलक**
- The Orion
- Arctic home in the Vedas

↳ आधार - 'ज्योतिष = वसंत सम्पात'

- अदिति काल = 6000 - 4000 ई.पू. = निविद मन्त्र गद्य-पद्यात्मक
- मृगशिरा काल = 4000 - 2500 ई.पू. = ऋग्वेद के अधिकांश सूक्त
- कृत्तिका काल = 2500 - 1400 ई.पू. = चारों वेदों का संकलन
- सूत्र काल = 1400 - 500 ई.पू. = सूत्र ग्रन्थ और षड् दर्शन

⇒ **एम. विन्टरनित्स** → A History of Indian literature

↳ आधार = मितान्नी शिलालेख → पुरातत्त्वविज्ञान के आधार पर

काल = 2500 से 500 ई.पू.

⇒ **स्वामी दयानन्द सरस्वती**

↳ वेदों का उद्भव परमात्मा से सृष्टि के प्रारम्भ में

⇒ **श्री अविनाश चन्द्र दास** → ऋग्वेदिक इण्डिया

↳ 25000 वर्ष ई.पूर्व.

ऋग्वेद → आयुर्वेद
यजुर्वेद → धनुर्वेद
सामवेद → गान्धर्ववेद
अथर्ववेद → स्थापत्यवेद.

कृष्णयजुर्वेदस्य पारायणकर्ता → मित्रः

* मुख्य

* प्रातिशाख्य *

* प्रत्येक शाखा से सम्बद्ध व्याकरण आदि का बोध कराने वाला ग्रन्थ।

⇒ ऋक्प्रातिशाख्य :

↳ · अपर नाम - 'पार्षद या पारिषद सूत्र'
· रचयिता - शौनक
· 3 अध्याय, 18 पटल
· प्रथम पांच अध्याय - संज्ञा, संहिता, स्वर, सन्धि, नति

भाष्य:
↳ · उव्वट का भाष्य
· विष्णुमित्र कृत वृत्ति

⇒ शुक्लयजुर्वेदीय प्रातिशाख्य : वाजसनेयी प्रातिशाख्य

↳ रचयिता → कात्यायन
8 अध्याय

भाष्य:
↳ · उव्वट कृत → 'मातृदेवनामक' भाष्य
· अनन्तभट्ट कृत → 'पदार्थप्रकाशक' नामक भाष्य

⇒ कृष्णयजुर्वेदीय : तैत्तिरीय प्रातिशाख्य

↳ · 2 खण्ड, 12 - 12 अध्याय करके 24 अध्याय

भाष्य =
↳ * माहिषेय → पदक्रमसदन भाष्य *
* सोमयार्थ → त्रिभाष्यरत्नभाष्य
* गोपालायज्वा → वैदिकाभरण भाष्य

Scanned with CamScanner

⇒ सामवेदीय प्रातिशाख्य

↳ • पुष्पसूत्र → गोभिल

• ऋक् तन्त्र = सामवेद के कौथुम शाखा से सम्बन्धित

↳ शाकटायन

⇒ अथर्ववेदीय प्रातिशाख्य

↳ • शौनकीय चतुरध्यायिका

↳ अंग्रेजी अनुवाद डॉ ह्विटनी ने किया था।

•

• अथर्ववेदीय प्रातिशाख्य

Scanned with CamScanner

ऋक्प्रातिशाख्य

↳ ऋग्वेद से सम्बन्धित

- आचार्य शौनक द्वारा विरचित
- ऋक्प्रातिशाख्य पर उव्वट ने भाष्य लिखा है

* 3 अध्याय, 18 पटल

संज्ञा - संहिता - स्वर - सन्धि - नति

⇒ समानाक्षर

'अष्टौ समानाक्षराण्यादितः'

= आरम्भ से आठ वर्ण [अ, आ, ऋ, ॠ, इ, ई, उ, ऊ] समानाक्षर कहे जाते है।

⇒ सन्ध्यक्षर

'ततश्चत्वारि सन्ध्यक्षराणि'

= उसके बाद 4 वर्ण [ए, ओ, ऐ, औ] सन्ध्यक्षर कहे जाते है।

⇒ अघोष

* जिह्वामूलीय उपध्मानीय अघोषसंज्ञका सन्ति
* 'अन्त्याः सप्त तेषाम् अघोषाः'

= अर्थात् उष्म वर्णो में अन्तिम सात वर्ण [श, ष, स, अः, ≍क, ≍प, अं] अघोष कहे जाते है।

* 'वर्गे वर्गे च प्रथमौ अघोषौ'

= प्रत्येक वर्ग में प्रथम दो वर्ण भी अघोष संज्ञक होते है।
क-ख, च-छ, ट-ठ, त-थ, प-फ ।

Scanned with CamScanner

संयोग

⇒ **सोष्म**

'युग्मौ सोष्माणौ'

= वर्ग के द्वितीय और चतुर्थ वर्ण सोष्म संज्ञक होता है।

ख-घ, छ-झ, ठ, ढ, थ-ध, फ-भ

⇒ **अनुनासिक**

'अनुनासिकोऽन्त्यः'

= वर्ग के अन्तिम वर्ण अनुनासिक संज्ञक होता है।

ञ, म, ङ, ण, न

⇒ **स्वरभक्ति**

'स्वरभक्तिः पूर्वभागमक्षराणाम्'

सा द्विविधा - दीर्घस्वरभक्तिः, ह्रस्वस्वरभक्तिः

दीर्घस्वरभक्तिः → वनस्पतये शतवल्शः, कर्हि

ह्रस्वस्वरभक्तिः → आर्ष्टिषेणः, वर्ष्यान्

⇒ **यम**

'स्पर्शाः यमानुनासिकाः स्वान्परेषु'

(i) अघोषाल्पप्राण = कँ, चँ, टँ, तँ, पँ

(ii) अघोषमहाप्राण = खँ, छँ, ठँ, थँ, फँ

(iii) सघोष-अल्पप्राण = गँ, जँ, डँ, दँ, बँ

(iv) सघोष-महाप्राण = घँ, झँ, ढँ, धँ, भँ

20 भेद

अल्पप्राण महाप्राण

अघोष सघोष

⇒ **रक्त**

'रक्तसंज्ञोऽनुनासिकः'

'अनुनासिकोऽन्त्यः'

Scanned with CamScanner

संयोग

'संयोगस्तु व्यञ्जनसन्निपात:'

= व्यञ्जन वर्णों का मेल संयोग कहलाता है। जैसे → 'प्रवश्चिद्भामिषम्'

⇒ प्रगृह्य

• "सम्बोधनात्मकस्य पदस्य अन्ते विद्यमानस्य 'ओकारस्य' - आमन्त्रित ओकार प्रगृह्य संज्ञा"। यथा - भानो, विष्णो ।

• अस्मे, युष्मे, त्वे अमो च प्रगृह्या:

⇒ रिफित

• 'उभौरेफौ पञ्चम: नामिपूर्व:'
यथा - अग्निरश्मिना जन्मना

• अन्तोदात्तमन्त:

• महोऽपोवर्जमितरो यथोक्तम्

* आश्रयस्थानभागिन: अयोगवाहा:

Scanned with CamScanner

संवाद सूक्त

⇒ **विश्वामित्र नदी संवाद**

↳ 3.33 सूक्त

* विश्वामित्र के पिता = कुशिक:

- 13 मन्त्र
- ऋषि = विश्वामित्र

विषय = 13 मन्त्रों में विश्वामित्र द्वारा 'शतुद्री' और 'विपाट' नदियों से मार्ग देने के लिए प्रार्थना की जाती है,

मन्त्र = • प्र पर्वतानामुशती उपस्थादश्वे इव विषिते हासमाने ।
गावेव शुभ्रे मातरा रिहाणे, विपाट्-शतुद्री पयसा जवेते ॥

* एतद्वचो जरितर्मापि मृष्ठा, आ यत्ते घोषानुत्तरा युगानि ।
उक्थेषु कारो प्रति नो जुषस्व, मा नो नि क: पुरुषत्रा नमस्ते ॥

* अच्छा सिन्धु मातृतमामयासं,

* एना वयं पयसा पिन्वमाना,

* ओ षु स्वसार: कारवे: शृणोत,

* देवोऽनयत्सविता सुपाणिस्तस्य वयं प्रसवे याम उर्वी: ।

* एतद्वचो जरितर्मापि मृष्ठा, आ यत्ते घोषानुत्तरा युगानि ।
उक्थेषु कारो प्रति नो जुषस्व, मा नो नि क: पुरुषत्रा नमस्ते ।

* ओ षु स्वसार: कारवे शृणोत

* आ ते कारो शृणवामा वचांसि

Scanned with CamScanner

⇒ # यम-यमी संवाद

↳ • 10/10 सूक्त

• 15 मन्त्र

• ऋषि - यमी वैवस्वती, यम वैवस्वत ।

• विषय = यमी अपने भाई यम को अनेक प्रलोभन देकर उससे विवाह करने का प्रस्ताव रखती है परन्तु यम इसकी निन्दा करता है, क्योंकि यह सगोत्र सम्बन्ध अनैसर्गिक और महर्षियों के विधानों के विरुद्ध है।

मन्त्र =

* ओ चित सखायं सख्या, ववृत्यां तिरः पुरु चिदर्णवं जगन्वान्, पितुर्नपातमा दधीत वेधा अधि क्षमि प्रतरं दीध्यानः॥
* 'उशन्ति घा ते अमृतास एतदेकस्य चित् त्यजसं मर्त्यस्य'
* गर्भे नु जनिता दम्पती कर्देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूपः।
* को अस्य वेद प्रथमस्याह्नः क ईं ददर्श क इह प्रवोचत्
* जायेव पत्ये तन्वं रिरिच्यां
* रात्रीभिरस्मा अहभिर्दशस्येत
* आ घा ता गच्छानुत्तरा युगानि
* किं भ्राता सधदनाथं भवाति
* परिष्वजाते लिबुजेव वृक्षम् ।
* पापमाहुर्यः स्वसारं निगच्छात्

Scanned with CamScanner

पुरुरवा - उर्वशी संवाद

→ 10·95 सूक्त

- 18 मन्त्र
- ऋषि - पुरुरवा और उर्वशी

विषय = पुरुरवा और उर्वशी की प्रेमकथा वर्णित है। पुरुरवा एक मनुष्य है और उर्वशी एक अप्सरा। दोनों चार वर्ष तक एकसाथ रहते हैं। उनके 'आयुष' नामक एक पुत्र भी होता है किन्तु शाप के प्रभाव से उर्वशी के मिलन की यह अवधी समाप्त हो जाता है और वह एकाएक लुप्त हो जाती है।

मन्त्र

- हये जाये मनसा तिष्ठ घोरे वचांसि मिश्राकृणवावहै नु।
  न नौ मन्त्रा अनुदितास एते मयस्करन् परतरे चनाहन्॥
- * इषुर्न श्रिय इषुधेरसना गोषाः शतसा न रंहिः
- * श्रिये गावो न धेनवोऽनवन्त   श्रि = उर्वशी
- * दस्युहत्याय देवाः
- * कदा सूनुः पितरं जात इच्छाच्चक्रन्नाश्रु वर्तयद्विजानन्।
  को दम्पती समनसा वि यूयोदध यदग्निः श्वशुरेषु दीदयत्॥
- * सुदेवो अद्य प्रपतेदनावृत्परावतं।
- * नैव स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति।
- * इति त्वा देवा इम आहुरैळ यथेमेतद्भवसि मृत्युबन्धुः।

पुरुरवा को ऐल कहा गया है।

⇒ **सरमा - पणि संवाद**

↳ 10/108 सूक्त

- 11 मन्त्र
- ऋषि - पणि सरमा,

विषय = सरमा नामक एक शुनी और पणि नामक असुर का संवाद प्राप्त होता है। पणि ने आर्य लोगों की गायों को चुराकर कहीं अन्धेरी गुफा में डाल दिया है। इन्द्र ने अपनी शुनी सरमा को उन्हें खोजने के लिए और पणियों को समझाने के लिए दूती बनाकर भेजा है।

प्रमुख मन्त्र:

* किमिच्छन्ती सरमा प्रेदमानड्, दूरे ह्यध्वा जगुरिः पराचैः। कास्मेहितिः का परितक्म्यासीत्कथं रसाया अतरः पयांसि॥
* इन्द्रस्य दूतीरिषिता चरामि
* नाहं = सरमा पणि
* नाहं तं वेद दभ्यं दभत्स
* स्वसारं त्वा कृणवै मा पुनर्गा अप ते गवां सुभगे भजाम
* नाहं वेद भ्रातृत्वं नो स्वसृत्वमिन्द्रो
* सोमो ग्रावाण ऋषयश्च विप्राः

ईशोपनिषद

* शुक्ल यजुर्वेद का 40वां अध्याय ,
* 18 मन्त्र
* प्रथम मन्त्र → ईशावास्यमिदम्
  अन्तिम मन्त्र → अग्ने नय सुपथा राये

⇒ ईशोपनिषद की प्रमुख सूक्तियां :

* ईशावास्यमिदं सर्वं यत् किञ्चिजगत्यां जगत् ।
  तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ॥
* कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः ।
  एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥
* यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्येवानुपश्यति ।
  सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते ॥
* अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते ।
* सम्भूतिं च विनाशं च यस्तद् वेदोभयं सह ।
  विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्याऽमृतमश्नुते ॥

सम्भूति = अविनाशि कार्यब्रह्म

असम्भूति = कारण स्वरूप प्रकृति

* यस्मिन सर्वाणि भूतान्येवाभूद् विजानतः
  तत्र को मोहः कः शोकः एकत्वमनुपश्यतः ॥
* पूषन्नेकर्षे यम सूर्य प्राजापत्य व्यूहरश्मीन्
  समूह तेजो यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते पश्यामि
  योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि ॥
* क्रतो स्मर , कृतं स्मर
* हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् ।
  तत्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये ॥
* अग्ने ~~देव~~ नय सुपथा राये अस्मान देव वयुनानि विद्वान् ,

Scanned with CamScanner

स्वरित 08

- स्वतन्त्र
  - असंधिज
    - जात्य (नित्य)
  - संधिज
    - क्षैप्र (यण् संधि)
    - प्रश्लिष्ट (गुण, वृद्धि, दीर्घ संधि)
    - अभिनिहित * (पूर्वरूप)
- आश्रित
  - तैरोविराम
  - पादवृत्त
  - तैरोव्यंजन
  - तथाभाव्य

* जात्योऽभिनिहितः क्षैप्रः प्रश्लिष्टश्च तथाऽपरः।
तैरोव्यंजनसंज्ञश्च तथा तैरोविरामकः।
पादवृत्तो भवेत्तद्वत् ताथाभाव्य इति स्वराः॥

⇒ वेद व्याख्या पद्धति

- भारतीय
  - प्राचीन
    - वैज्ञानिक
      - यास्क
      - वेंकटमाधव
      - महीधर
      - स्कन्दस्वामी
    - याज्ञिक
      - सायण, उव्वट *
  - अर्वाचीन
    - वैज्ञानिक
      - दयानन्द सरस्वती
      - मधुसूदन ओझा
      - डॉ. विष्णुकुमार शर्मा
    - आध्यात्मिक
      - अरविन्द
- पाश्चात्य
  - परम्परावादी : * विल्सन, मैक्समूलर, कीथ, वेबर [मैकोवेवि]
  - भाषाशास्त्रीय : ग्रासमान, विण्टरनित्स, रुडाल्फ राँथ
  - समन्वयवादी : लुडविग, ग्रिफिथ, ओल्डनबर्ग, मैक्डालन

Scanned with CamScanner

⇒ होता — अध्वर्यु — उद्गाता — ब्रह्मा

होता	अध्वर्यु	उद्गाता	ब्रह्मा
मैत्रावरुण	नेष्टा	प्रस्तोता	ब्राह्मणाच्छंसि
अच्छावाक्	प्रतिप्रस्थाता	प्रतिहर्ता	आग्नीध्र
ग्रावस्तुत	उन्नेता	सुब्रह्मण्य	पोता

होता ⇒ ऋचां पोषमास्ते

अध्वर्यु ⇒ यज्ञस्य मात्रां विमिमीत

उद्गाता ⇒ गायत्रं गायति

ब्रह्मा ⇒ जातविद्यां वदति

ज्ञान सूक्त 10·71
ऋषि - बृहस्पति आंगिरस
मन्त्र - 11 मन्त्र

* ऋचां व: पोषमास्ते पुपुष्वान् गायत्रं वो गायति शक्करीषु ।
ब्रह्मा वो वदति जातविद्यां यज्ञस्य मात्रां वि मिमीत उ त्व: ॥

ज्ञान सूक्त 11वां मन्त्र

= अग्निष्टोम

↳ • 12 शस्त्र
• 16 ऋत्विक
• दर्शयज्ञ - अमावस्या में । शुक्लपक्ष में
पौर्णमास यज्ञ - पूर्णिमा में । कृष्णपक्ष में

⇒ यज्ञ के पांच अंग

↳ • देवता, हविर्द्रव्य, मन्त्र, ऋत्विक, दक्षिणा

Scanned with CamScanner